सूरह — एक कहानी

सूरह अश-शम्स

सूरज

पूरा सफ़र — एक हक़ीक़त के लिए ग्यारह क़समें —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 91 • 15 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वश्-शम्सि व दुहाहा
1. क़सम है सूरज की और उसकी चमक की।

व नफ़्सिंव्-व मा सव्वाहा
7. और नफ़्स की, और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया।

फ़-अल्हमहा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा
8. फिर उसमें उसकी बदकारी और उसका तक़्वा इल्हाम कर दिया।

क़द अफ़्लह मन ज़क्काहा
9. कामयाब हुआ वो जिसने उसे पाक किया।

व क़द ख़ाब मन दस्साहा
10. और नाकाम हुआ वो जिसने उसे दब्बा दिया।

व ला यख़ाफ़ु 'उक़्बाहा
15. और वो उसके अंजाम से नहीं डरते।

आसमान और ज़मीन की सात निशानियाँ

बेटा, इस सूरह में पूरे क़ुरआन का सबसे लंबा मुसलसल क़समों का सिलसिला है — ग्यारह आयतें क़सम की, फिर असल बात आती है। और जब अल्लाह किसी चीज़ पर ग्यारह बार क़सम खाएँ, तो समझ लीजिए कि आगे जो आ रहा है वो आज की सबसे अहम बात है।

इस रवानी को सुनिए: 'वश्-शम्सि व दुहाहा — क़सम है सूरज की और उसकी सुबह की चमक की — वल्-क़मरि इज़ा तलाहा — और चाँद की जब वो उसके पीछे आए — वन्-नहारि इज़ा जल्लाहा — और दिन की जब वो उसे ज़ाहिर करे — वल्-लैलि इज़ा यग़्शाहा — और रात की जब वो उसे ढाँप ले — वस्-समा-इ व मा बनाहा — और आसमान की और उसकी जिसने उसे बनाया — वल्-अर्ज़ि व मा तहाहा — और ज़मीन की और उसकी जिसने उसे बिछाया।'

बेटा, यहाँ तरतीब देखिए — पूरा सिलसिला जोड़ों और अज़्दाद पर खड़ा है: सूरज और चाँद, दिन और रात, आसमान और ज़मीन, ढाँपना और ज़ाहिर करना। और हर जोड़ी मुकम्मल हम-आहंगी में काम कर रही है: चाँद सूरज के पीछे चलता है, दिन वो ज़ाहिर करता है जो रात ने छुपाया था, आसमान उस ज़मीन पर मेहराब बना कर खड़ा है जो नीचे बिछी हुई है।

यह जान-बूझ कर है, बेटा। अल्लाह आपको एक ऐसी कायनात दिखा रहे हैं जो मुतवाज़िन अज़्दाद से बनी है — क्योंकि वो अभी आपके अंदर के एक जोड़े के बारे में बात करने वाले हैं।

नफ़्स और उसकी दो आवाज़ें

'व नफ़्सिंव्-व मा सव्वाहा — और नफ़्स की, और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया — फ़-अल्हमहा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा — फिर उसमें उसकी बदकारी और उसका तक़्वा इल्हाम कर दिया।'

बेटा, यहाँ रुक जाइए। सूरज, चाँद, दिन, रात, आसमान और ज़मीन की क़सम खाने के बाद — अल्लाह इंसान के नफ़्स की क़सम खाते हैं। आपका नफ़्स उसी फ़ेहरिस्त में रखा गया जिसमें सूरज और आसमान हैं। यही उसकी क़ीमत है।

और उसके बारे में वो क्या फ़रमाते हैं? 'सव्वाहा' — उन्होंने उसे ठीक बनाया, मुतवाज़िन किया, मुकम्मल किया। और फिर: 'अल्हमहा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा' — उन्होंने उसमें दोनों इल्हाम कर दिए: उसकी ख़राबी का शुऊर भी और उसकी परहेज़गारी का शुऊर भी।

बेटा, इंसानी फ़ितरत के बारे में यह नाज़िल होने वाले सबसे गहरे बयानात में से एक है। हर एक शख़्स के अंदर — मोमिन और मुनकिर, नेक और मुजरिम — दो आवाज़ें हैं। एक फ़ुजूर की तरफ़ खींचती है: झूट, शॉर्टकट, ना-जाइज़ नज़र, ज़ालिम जुमला। दूसरी तक़्वा की तरफ़: सच्चाई, ज़ब्त, रहमत, अल्लाह का ख़ौफ़।

और ग़ौर कीजिए: अल्लाह फ़रमाते हैं कि उन्होंने दोनों इल्हाम किए। उन्होंने दोनों की

सलाहियत बनावट में रख दी। क्यों? क्योंकि यही चीज़ इंसान को उस फ़रिश्ते से अलग करती है जो ना-फ़रमानी कर ही नहीं सकता, और उस जानवर से जो चुनाव कर ही नहीं सकता। आपकी क़ीमत ठीक इसी बात में है कि आप दोनों तरफ़ जा सकते हैं — और आप चुनते हैं।

बेटा, इसका मतलब यह भी है: जब आप अपने अंदर बुराई की तरफ़ खींच महसूस करें, तो सिर्फ़ उससे आप बुरे नहीं हो जाते। दोनों आवाज़ों का होना आम है, सब के साथ है, और जान-बूझ कर रखा गया है। सवाल कभी यह नहीं होता कि 'क्या मुझे खींच महसूस होती है?' — सब को होती है। सवाल यह है कि आप किस आवाज़ के पीछे जाते हैं।

इसे पाक कीजिए — या दब्बा दीजिए

और अब, ग्यारह क़समों के बाद, जवाब आता है — वो वजह जिसके लिए यह सारी क़समें खाई गईं। दो छोटी आयतें जिनमें पूरे दीन का मक़सद रख दिया गया है:

'क़द अफ़्लह मन ज़क्काहा — कामयाब हुआ वो जिसने उसे पाक किया — व क़द ख़ाब मन दस्साहा — और नाकाम हुआ वो जिसने उसे दब्बा दिया।'

बेटा, दोनों लफ़्ज़ों को खोल कर देखते हैं, क्योंकि ये अजीब ख़ूबसूरत हैं।

'ज़क्काहा' — तज़्किया से: पाक करना, और बढ़ाना भी। वही मादा जिससे ज़कात है, जो माल को पाक करती है और उसमें बरकत लाती है। तो नफ़्स का तज़्किया सिर्फ़ सफ़ाई नहीं है; यह काश्त है। बेटा, उस किसान की तरह जो घास-फूस निकालता है ताकि फ़सल उठ सके: आप तकब्बुर, हसद, लालच और गुनाहों की बक़ियात निकालते हैं — और जो उसके नीचे था वो उगना शुरू कर देता है।

'दस्साहा' — और यह लफ़्ज़ कमाल का है। इसका मतलब है किसी चीज़ को दफ़्न कर देना, ज़मीन में छुपा देना, नज़रों से हटा कर ठूँस देना। अरब इसी से मिलता जुलता लफ़्ज़ रेत में बच्ची को ज़िंदा दफ़्न करने के लिए इस्तेमाल करते थे।

तो नाकाम शख़्स, बेटा, वो नहीं जिसने अपना नफ़्स तबाह कर दिया — बल्कि वो

जिसने उसे दब्बा दिया। उसने उसके ऊपर तहें चढ़ा दीं: तवज्जोह हटाने वाली चीज़ों की, तफ़रीह की, बहानों की, गुनाहों की, और मसरूफ़ियत की। नफ़्स अभी भी उस सारी मिट्टी के नीचे मौजूद है — बस वो साँस नहीं ले सकता, बोल नहीं सकता, सुनाई नहीं दे सकता।

बेटा, असल ज़िंदगी में रूहानी मौत ठीक इसी तरह आती है। कोई सुबह उठ कर यह एलान नहीं करता कि 'आज मैं अपना ज़मीर मार दूँगा।' वो बस उसके ऊपर चीज़ें रखता चला जाता है यहाँ तक कि उसकी आवाज़ दब जाती है। और त्रासदी यह है कि यह दफ़्न ख़ामोशी से होता है — इसमें कोई ड्रामाई बात महसूस नहीं होती। यह एक आम, मसरूफ़, दिलचस्प ज़िंदगी जैसा लगता है।

तो आज रात अपने आप से पूछिए, बेटा: मैं इस नफ़्स की काश्त कर रहा हूँ, या उसे आहिस्ता आहिस्ता दफ़्न कर रहा हूँ? आज मैंने इसके ऊपर क्या रखा?

और क़ुरआन की ख़ूबसूरत तरतीब देखिए, बेटा: ग्यारह कायनाती क़समों के बाद, नतीजा सूरज या पहाड़ों के बारे में नहीं — बल्कि अपने दिल की सफ़ाई के उस छोटे, ज़ाती काम के बारे में है। पूरी कायनात उसी की गवाही के लिए पेश की गई।

समूद और वो ऊँटनी

और फिर सूरह हमें एक मिसाल देती है — एक असली क़ौम जिसने अपना नफ़्स दफ़्न कर दिया: 'कज़्ज़बत समूदु बि-तग़वाहा — समूद ने अपनी सरकशी की वजह से झुठलाया — इज़िम्ब-अ'स अश्क़ाहा — जब उनका सबसे बद-बख़्त शख़्स उठा।'

बेटा, आप समूद को जानते हैं — वो लोग जिन्होंने पहाड़ों को तराश कर घर बनाए थे। अल्लाह ने उनकी तरफ़ सालेह (अलैहि0) को भेजा, और उन्होंने निशानी माँगी। तो अल्लाह ने पत्थर में से एक ऊँटनी निकाल दी — उनकी आँखों के सामने एक मोजिज़ा — और एक शर्त रखी: एक दिन वो कुएँ से पिएगी, और एक दिन तुम। सादा बात। पानी बाँट लो।

'फ़-क़ाल लहुम रसूलुल्लाहि नाक़तल्लाहि व सुक़्याहा — तो अल्लाह के रसूल ने

उनसे कहा: यह अल्लाह की ऊँटनी है, इसे पीने दो!'

मगर उन्हें वो खलने लगी। और उनके सबसे बद-बख़्त आदमी को — आयत उसे 'अश्क़ाहा' कहती है — भीड़ ने आगे कर दिया ताकि वो काम हो जाए जो सब चाहते थे मगर जिसका इल्ज़ाम कोई अपने सर नहीं लेना चाहता था।

'फ़-कज़्ज़बूहु फ़-'अक़रूहा — तो उन्होंने उसे झुठलाया और उस ऊँटनी की कूँचें काट दीं।'

बेटा, ग्रामर ग़ौर से देखिए, क्योंकि इसमें बहुत बड़ा सबक़ है। क़त्ल एक आदमी ने किया — 'उनका सबसे बद-बख़्त शख़्स उठा'। मगर अल्लाह फ़रमाते हैं 'फ़-'अक़रूहा' — उन्होंने कूँचें काटीं, जमा के सीग़े में। और सज़ा: 'फ़-दम्दम 'अलैहिम रब्बुहुम बि-ज़म्बिहिम फ़-सव्वाहा — तो उनके रब ने उनके गुनाह की वजह से उन्हें कुचल दिया और बराबर कर दिया' — उन सब को।

उन सब को एक आदमी के जुर्म का ज़िम्मेदार क्यों ठहराया गया? क्योंकि वो राज़ी थे। उन्होंने इसे पसंद किया। वो चाहते थे कि यह हो, और जब हुआ तो ख़ुश हुए। बेटा, अल्लाह के हाँ ख़ामोशी से राज़ी रहने वाली भीड़ उस हाथ के अमल में शरीक होती है जो काम करता है। इसी लिए नबी ﷺ ने सिखाया कि जो किसी क़ौम के अमल पर राज़ी हो, वो उन्हीं में शुमार होता है।

सोचिए कि हमारे ज़माने में इसका क्या मतलब है, बेटा: वो ज़ुल्म जो आपने नहीं किया मगर देख कर मज़ा लिया; वो तोहमत जो आपने शुरू नहीं की मगर आगे फ़ॉरवर्ड कर दी; वो ज़्यादती जो आपने नहीं की मगर उसके हक़ में दलीलें दीं। 'फ़-'अक़रूहा' — उन्होंने कूँचें काट दीं।

'व ला यख़ाफ़ु 'उक़्बाहा — और वो इसके अंजाम से नहीं डरते।' बेटा, यह आख़िरी सतर शानदार है। इंसानी हुक्मरान कुछ भी करने से पहले झिझकते हैं — लोग क्या कहेंगे, नतीजा क्या होगा, कौन बदला लेगा? अल्लाह ने एक पूरी तहज़ीब तबाह कर दी और डरने के लिए कोई अंजाम था ही नहीं, कोई जवाब-देह नहीं, कोई रद्द-ए-अमल नहीं। वो अल्लाह हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. आपका नफ़्स सूरज और आसमान के साथ एक ही फ़ेहरिस्त में क़सम का मौज़ू बना — यही उसकी क़ीमत है।

2. दोनों आवाज़ें आप में जान-बूझ कर रखी गईं; सवाल यह नहीं कि खिंचाव है या नहीं, सवाल यह है कि आप किसके पीछे जाते हैं।

3. तज़्किया सिर्फ़ सफ़ाई नहीं, काश्त है — घास-फूस निकालिए और देखिए नीचे से क्या उगता है।

4. 'दस्साहा' — नाकामी नफ़्स को तबाह करने से नहीं, उसे दफ़्न करने से आती है; और यह ख़ामोशी से होता है।

5. रोज़ पूछिए: आज मैंने अपने ज़मीर के ऊपर क्या रखा?

6. जुर्म एक ने किया, सज़ा सब को मिली — ख़ामोश रज़ामंदी शराकत है।

7. जो आपने शुरू नहीं किया मगर आगे बढ़ा दिया, उसमें आपका हिस्सा लिखा जाता है।

या अल्लाह, हमारे नफ़्स को पाक फ़रमाइए — आप ही उसे पाक करने वाले हैं, आप ही उसके वली और मौला हैं। आमीन।